Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

महात्मा गांधी का नैतिक दर्शन

राजेश कुमार पालीवाल*

* सहायक आचार्य (इतिहास) (विद्यासम्बल योजना) श्री द्वारिकाधीश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजसमन्द (राज.) भारत

शोध सारांश – गांधी कोई नाम नहीं विचारधारा है। इस विचार धारा को आगे बढ़ाने का कार्य पोरबन्दर गुजरात में जन्में मोहनदास ने किया उन्होंने न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व में अपनी विचार धारा को प्रस्तुत किया। उनकी विचारधारा में नैतिकता अपृश्यता तथा रंगभेद नीति प्रमुख थी। परन्तु उनका नैतिक दर्शन अत्यन्त व्यापक है। उन्होंने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किये इनके विचार मानसिक या बौद्धिक स्तर तक ही सीमित नही अपितु उन्होंने अपने विचारों को जीने का प्रयास किया उनका नैतिक दर्शन गांधीवादी कहलाता है।
शब्द कुंजी – सत्य, अंहिसा, सत्याग्रह, सर्वोदय न्यासधारिता, साधन पवित्रता।

प्रस्तावना – महात्मा गांधी ने अपने जीवन की शुरूआत बढ़े कड़वे अनुभव से की थी। जब वह अपनी शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् प्रथम बार व्यवसाय तथा नौकरी करने अफ्रीका गये तब उनके साथ 'मेरित्सबर्ग' में उनको ट्रेन से धक्का देकर उतार दिया गया था।

मेरित्स बर्ग बाण्ड ने गांधी जी जीवन यात्रा को एक नई दिशा प्रदान की। वहां से उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग के बारे में विचार करने लग गये। और मानव कल्याण की विचारधारा का उदय हुआ। मानव कल्याण ही उनका नैतिक दर्शन था।

शोध विधि – प्रस्तुत शोध पत्र ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक दृष्टि पर आधारित है। शोध सामग्री की प्रमुख पुस्तकों से संकलित किया गया है। यह शोध पत्र द्वितीय आंकड़ों पर आधारित है।

शोध के उद्देश्य: प्रस्तुत शोध पत्र के निम्न उद्देश्य है :

1. गांधीजी के दार्शनिक विचारों को आगे बढ़ाना।
2. उनके विचारों (दर्शन के) जन मानस के जीवन में उतारना।
3. प्रत्येक व्यक्ति को उनके विचारों के अनुरूप आचरण करना।

महात्मा गांधी का नैतिक दर्शन

1. अहिंसा – इनकी नैतिक अवधारणा में अहिंसा का विशेष महत्व है। इस विचार पर या अहिंसा सम्बन्धित विचारों पर जैन, बौद्ध, ईसाई आदि धर्मों का प्रभाव दिखाई देता है। इनके इस विचार टॉलस्टॉय के नैतिक दर्शन का गांधी के दर्शन पर प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने अंहिसा का दो अर्थो में प्रयोंग किया। (1) सकारात्मक (2) नकारात्मक। उन्होंने कायरता को हिंसा से भी बुरा कहा। कायरता व अहिंसा एक साथ ही नहीं चल सकती है। उनके अनुसार कि व्यक्ति को मन कर्म और किसी प्रकार से दु:खही नहीं करना ही अहिंसा है। किसी व्यक्ति के प्रति निर्दयता क्रुरता आदि नहीं करना ही अहिंसा है। उनके अनुसार अहिंसा वीरों का आभुषण है।

गांधी दर्शन के अनुसार प्राणी के प्रति सद्व्यवहार और उसके प्रति प्रेम ही अहिंसा है। प्रत्येक जीव चाहे व छोटा हो या बढ़ा हो उसके प्रति दया रखना अंहिसा की भावना है।

परन्तु उनके विचार में अन्याय को सहन करना अंहिसा नहीं दूर्बलता अन्याय के खिलाफ हिंसा को उन्होंने स्वीकार नहीं किया परन्तु इसका उन्होंने विरोध भी नहीं किया।

2. सत्य – यह गांधी जी के दर्शन का परम मूल्य है। उनका सम्पूर्ण दर्शन सत्य की धारणा पर आधारित है। मुद्ता तथा अविनम्रता को वाणी द्वारा व्यक्त करना सत्य का आधार है। जो तथ्य जिस रूप में देखा सुना अथवा समझा जाये उन्हें बिना किसी स्वार्थ के लिए परिवर्तन कर मन वचन तथा कर्म उक्त तीनों ही स्तरों पर ठीक उसी रूप में व्यक्त करना सत्य है। सत्य का केवल सैद्धान्तिक रूप में स्वीकार नहीं होता अपितु व्यवहारिक रूप में दिखाई देना चाहिए। उनके अनुसार 'ईश्वर सत्य है' यह परिमार्जित तथा परिष्कृत रूप है। सत्य का क्षेत्र ईश्वर से अधिक व्यापक है। सत्य वह मूल्य है जो सदाचार से सम्बन्धित हैं। यह सदाचार का प्रतीक है। इनके विचारोनुसार 'सत्य ही ईश्वर है तथा ईश्वर ही सत्य है जो सर्वत्र विद्यमान है।' सत्य का पालन राजनैतिक धार्मिक सामाजिक तथा व्यक्तिगत सभी स्तरों पर समान रूप से होना चाहिए।

3. सत्याग्रह – इसकी अवधारणा 'सरमन ऑफ द माउण्ट' से प्राप्त हुई हैं। सत्याग्रह दो शब्दों से मिलकर बना है। सत्य तथा आग्रह अर्थात् जो सत्य है उस पर जीवन पर्यन्त दृढ़ रहना तथा उसके लिए आग्रह करना। सत्याग्रह गांधी जी के अनुसार – 'अंहिसा में अभेद निष्ठा रखने वाले व्यक्ति का सत्य के प्रति आग्रह सत्याग्रह सत्य की रक्षा करना हैं। किन्तु विरोधी को कष्ट पहुंचाकर नहीं, अपितु स्वयं कष्ट सहनकर। इनके अनुसार यह आध्यात्मिक शक्ति है। इससे अत्याचारी का मन परिवर्तन किया जा सकता है।'

सत्याग्रही के लक्षण – (1) धैर्यवान (2) विनम्र (3) निर्भिक (4) मन वचन तथा कर्म में एकरूपता (5) मृदुभाषी एवं अल्पभावी (6) ईमानदार (7) आत्मसंयमी तथा अनुशासित (8) ईश्वर के प्रति आस्थावान सत्याग्रह की प्रकार ।

(1) असहयोग – सत्याग्रही द्वारा असत्य अवैद्य अनैतिक या अहितकर कानुनों तथा नियमों का सहयोग न करना।

(2) हड़ताल – कुछ समय के लिए व्यक्ति द्वारा अपने स्वधर्म का पालन न

करना अन्यायपूर्ण तथा अनैतिक कानुनों के विरूद्ध प्रतिकारात्मक प्रतिरोध प्रदर्शित करना।

(3) हिजरत – सत्याग्रही को अत्याचार के स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर चले जाना चाहिए।

(4) सविनय अवज्ञा – अनैतिक या अन्यायपूर्ण नियमों का उल्लंघन करना।

उपवास – सत्याग्री स्वयं आत्मशुद्धि के साथ-साथ विरोधी की आत्मशुद्धि करने का प्रयास करता है।

सर्वोदय – सर्वोदय की भावना हमें सर्वप्रथम भारतीय वैदिक साहित्य के उपनिषदों में दिखाई देती है।

'सर्वभवन्तु सुखिन्'

सर्व+उदय अर्थात सभी की उन्नति तथा कल्याण सभी का सर्वपक्षीय तथा सर्वांगीण विकास ही सर्वोदय है। गांधीजी के नैतिक दर्शन में आदर्श समाज का उद्देश्य सर्वोदय हैं। अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम हित या कल्याण ही सर्वोदय है।

गांधी जी ने सर्वोदय की अवधारणा ब्रिटिश दार्शनिक रास्किन की प्रसिद्ध पुस्तक 'यन्दजव जीम स्ववज' से प्रभावित होकर लिखी हैं इनके अनुसार सत्ता का विकेनद्रीकरण ही सर्वोदय है। वर्गविहीन राज्य विहीन समाज की स्थापना करना।

न्यास धारिता – यह दर्शन गांधीजी के आर्थिक दर्शन से सम्बन्धित है। उन्होंने ऐसे समाज की कल्पना कि जिसमें धनी-निर्धन, ऊँ-नीच का भेद नहीं हो। सभी व्यक्ति पूर्ण रूपेण विकसित हो।

'वह आर्थिक विचार धारा जिसके अनुसार पुंजीपति समाज की धरोहर रूपी पुंजी का संरक्षण करे तथा उसका प्रयोग समाज के हितार्थ करें। यह पुंजवादी तथा समाजवादी के मध्य की अवस्था है। गांधीजी के न्यासधारिता के अनुसार कोई भी व्यक्ति पुंजी या सम्पति लेकर पैदा नहीं हुआ। उसने सम्पूर्ण सम्पति प्रकृति से अर्जित की है। इसलिए सम्पति का वास्त्विक स्वामी समाज या ईश्वर है। अत: संरक्षक की भांति उस पुंजी की रक्षा करे तथा उसमें निरन्तर संवर्द्धन करेंगे साथ ही उसे अपने हित में प्रयुक्त ना करके लोक कल्याण तथा समाज के कल्याण के लिए काम में लेंगे। इस प्रकार इस आर्थिक व्यवस्था में पुंजी की उत्पादकता भी बनी रहेगी तथा शोषण न होने के कारण आर्थिक समानता भी क्रमश: दूर हो जायेगी।

रामराज्य – गांधीजी के अनुसार ऐसा राज्य जहाँ पर नैतिकता पर आधारित जनता का शासन हो तथा प्रत्येक व्यक्ति सर्वोदय को आधार बना कर अपने नैतिक कर्तव्यों का पालन करता हो यह समाज पूर्णत: अहिंसा शान्ति तथा प्रेम पर आधारित हो। इसकी कल्पना गांधी जी द्वारा 'हिन्दी स्वराज' पुस्तक में की गई। प्रत्येक व्यक्ति अपने नैतिक कर्तव्यों का पालन करता है तो इसकी कल्पना की जा सकती है। इसमें सत्ता का विकेन्द्रीकरण मूल आधार है। गांधी जी के अनुसार राम राज्य साधन है। जिससे व्यक्ति अपने नैतिक और आध्यात्मिक विकास कर सके।

सर्वधर्म – जब व्यक्ति अपने धर्म के साथ-साथ दूसरों के धर्मों का भी सम्मान करता है। तब विभिनन धर्मों के मध्य सामंजस्य तथा सौहार्द्र स्थापित होता है। यह विचारधारा सत्य अहिंसा प्रेम मानवता आधारित सर्वधर्म समभाव कहलाती है।

बुनियादी शिक्षा – गाँधीजी के अनुसार इस शिक्षा पद्धति और पाठ्यक्रम को इस रूप में निर्धारित और संचालित किया जावे जो विद्यार्थियां के हृदय बुद्धि तथा शरीर को शुद्ध करें।

निष्कर्ष – गांधीजी के नैतिक दर्शन में सम्पूर्ण समाज का विकास हो तथा समाज के प्रत्येक व्यक्ति निम्नतर से लेकर उच्चतर का विकास होना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति में कोई भेदभाव की भावना नहीं होनी चाहिए। जिससे समाज एवं सम्पूर्ण देश का निर्माण हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अहिंसा के प्रथम चरण (1910) – महात्मा गांधी, ई-पुस्तकालय।
2. सत्य के मेरे प्रयोग – महात्मा गांधी, ई-पुस्तकालय।
3. गांधीजी एवं सत्याग्रह – विकीपिडीया।
4. सर्वोदय – महात्मा गांधी, ई-पुस्तकालय।
5. गांधीजी के दर्शन – विकीपीडिया।

****